3. शिक्षा के अन्य क्षेत्र
(OTHER SPHERES OF EDUCATION)

1. स्त्री-शिक्षा (Women's Education)—**डॉ० एफ० ई० केई** के शब्दों में—**"पर्दा-प्रथा ने, जिसने छोटी बालिकाओं के अलावा सब मुसलमान स्त्रियों को एकान्त में बन्द रखा, उनकी शिक्षा को महान् कठिनाई का कारण बना दिया।"**

पर्दा प्रथा के कारण केवल छोटी आयु की बालिकाएँ मकतबों में जाकर बालकों के साथ विद्या का अर्जन करती थीं, पर उन्हें कुछ ही समय के बाद यह कार्य स्थगित करना पड़ता था। उनको उच्च शिक्षा की सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं, क्योंकि राज्य या समाज की ओर से उनके लिए पृथक् शिक्षा-संस्थाओं की कोई व्यवस्था नहीं की गई थी। फलस्वरूप, निम्न और निर्धन वर्गों की बालिकाएँ या तो ज्ञान-प्राप्ति के लाभ से वंचित रह जाती थीं या उनका ज्ञान अत्यन्त अल्प पढ़ने और लिखने तक सीमित रह जाता था।

मध्य वर्ग की बालिकाओं को शिक्षा के अधिक अवसर प्राप्त थे। वे विद्याध्ययन के लिए सामान्य मकतबों में न जाकर, व्यक्तिगत रूप से स्त्रियों द्वारा अपने घरों पर चलाए जाने वाले मकतबों में जाकर विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेती थीं। इस सम्बन्ध में **डॉ० यूसुफ हुसेन** ने लिखा है—**"निजी घरों में बालिकाओं को धार्मिक शिक्षा प्रदान करने के लिए मकतब थे, जहाँ अधिक आयु की महिलाएँ उनको कुरान, गुलिस्ताँ, बोस्ताँ और सदाचार की पुस्तकें पढ़ाती थीं।"**

मालवा के शासक गियासुद्दीन तुगलक ने जिसने सन् 1469 से 1500 तक शासन किया, सारंगपुर में सभी वर्गों की बालिकाओं के लिए, एक मदरसे की स्थापना की। **"फरिश्ता** (Ferishta) के अनुसार—**"इस मदरसे में बालिकाओं को नृत्य, संगीत, सिलाई, बुनाई, बढ़ईगीरी, सुनारगीरी, लुहारगीरी, जूते बनाने, मखमल बनाने, युद्ध-कला, रणक्षेत्र-कला आदि की शिक्षा दी जाती थी। उनकी शिक्षा का भार उनके अभिभावकों को वहन करना पड़ता था। अतः केवल धन-सम्पन्न व्यक्ति ही अपनी बालिकाओं को इस विद्यालय में अध्ययन के लिए भेज पाते थे।"**

राजघरानों और कुलीन परिवारों की बालिकाओं और स्त्रियों को उनके निवास स्थानों पर ही व्यक्तिगत रूप से शिक्षा दी जाती थी। उनको धर्म एवं साहित्य के अतिरिक्त, नृत्य, संगीत एवं अन्य ललित कलाओं की भी शिक्षा दी जाती थी। इस प्रकार, शिक्षा प्राप्त करने वाली अनेक मुस्लिम राजकुमारियों के नाम आज भी गर्व से स्मरण किये जाते हैं; जैसे—अल्तमश की पुत्री, रजिया सुल्ताना अपनी विद्वता के लिए विख्यात थी। दक्षिण की वीरांगना, चाँद सुल्ताना को तुर्की, अरबी, फारसी और मराठी भाषाओं पर समान अधिकार था। बाबर की पुत्री, गुलबदन बेगम की कृति, "हुमायूँ-नामा" इतिहास की अमूल्य निधि मानी जाती है। हुमायूँ की भतीजी सलीमा सुल्ताना; जहाँगीर की पत्नी, नूरजहाँ और औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा बेगम—सभी विदुषी महिलाएँ थीं।

उक्त महिलाओं के अतिरिक्त और भी अनेक सुशिक्षित स्त्रियाँ थीं। किन्तु, इनकी तुलना में उन सामान्य स्त्रियों की संख्या कहीं अधिक थी, जो अशिक्षित थीं। वस्तुस्थिति यह थी कि

जबकि राजघरानों और कुलीन परिवारों की स्त्रियों में शिक्षा का प्रचलन था, सामान्य स्त्रियों में शिक्षा का प्रसार नहीं हुआ। अतः वे शिक्षा से रंचमात्र भी लाभान्वित नहीं हुईं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए **डॉ० एफ० ई० केई** ने लिखा है—**"मुसलमान स्त्रियों के विशाल सामान्य समूह को पारिवारिक कर्त्तव्यों को करने के लिए घरेलू प्रशिक्षण के अलावा किसी भी प्रकार की कोई शिक्षा प्राप्त नहीं हुई।"**

2. व्यावसायिक शिक्षा (Professional Education)—दिल्ली के सुल्तानों और मुगल सम्राटों को व्यावसायिक शिक्षा के प्रति किसी-न-किसी रूप में कम या अधिक रुचि अवश्य थी। ऐसी परिस्थिति में व्यावसायिक शिक्षा का विकास होना स्वाभाविक था। हम इसके महत्त्वपूर्ण अंगों पर प्रकाश डाल रहे हैं; यथा—

(i) सैनिक शिक्षा (Military Education)—भारत के सब मुस्लिम शासकों का लक्ष्य अपने राज्य को स्थायी और सुदृढ़ बनाना था। विदेशी और विधर्मी होने के कारण, वे भारतीयों को सदैव शंका की दृष्टि से देखते थे। उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने और बनाये रखने के लिए मुस्लिम शासकों को समय-समय पर हिन्दू राजाओं से युद्ध करने पड़ते थे।

ऐसी परिस्थिति में मुस्लिम शासकों द्वारा सैनिक शिक्षा पर बल दिया जाना आवश्यक था। यह शिक्षा साधारण सैनिकों और राजकुमारों के लिए भिन्न प्रकार की थी। सैनिकों को तीर, भाला एवं तलवार चलाने, दुर्ग का घेरा डालने और घोड़े एवं हाथी पर बैठकर युद्ध करने की शिक्षा दी जाती थी। मुगल-काल में उनको गोली चलाने का भी प्रशिक्षण दिया जाता था। राजकुमारों को इन सभी बातों के अतिरिक्त सेना के संचालन, संगठन और नेतृत्व का विशेष प्रशिक्षण दिया जाता था। यहाँ यह बता देना असंगत न होगा कि सैनिक शिक्षा के लिए प्रशिक्षण-संस्थाएँ नहीं थीं। यह शिक्षा, राज्य के अनुभवी सैनिकों द्वारा दी जाती थी।

(ii) चिकित्साशास्त्र की शिक्षा (Medical Education)—चिकित्साशास्त्र की उपयुक्त शिक्षा देने के लिए संस्कृत के ग्रन्थों का फारसी में अनुवाद किया गया या इन ग्रन्थों के आधार पर फारसी में पुस्तकों की रचना की गई। इस प्रकार की कुछ उल्लेखनीय पुस्तकें थीं—"मदानुश-शिफाए-सिकन्दरी", "दस्तूर-उल-अतिब्बा" और "तुहफत-अल-मोमिन।"

चिकित्साशास्त्र की शिक्षा, मदरसों में या विशिष्ट शिक्षा-संस्थाओं में दी जाती थी। आगरा में अकबर द्वारा स्थापित किये गये मदरसे और रामपुर की विशिष्ट शिक्षा-संस्था चिकित्साशास्त्र की शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थी।

(iii) हस्तकलाओं की शिक्षा (Education in Handicrafts)—अधिकांश मुस्लिम शासक—ऐश्वर्य और विलासिता का जीवन व्यतीत करते थे। अतः इस जीवन की आवश्यकताओं से सम्बन्धित सभी हस्तकलाओं की आश्चर्यजनक उन्नति हुई। इस प्रकार की मुख्य कलाएँ थीं—कशीदाकारी, जरी, लकड़ी एवं हाथी दाँत का काम, दरी, पर्दे, जूते, रेशम, मलमल एवं आभूषण बनाना आदि।

इन हस्तकलाओं की शिक्षा—कारखानों में दी जाती थी। मुहम्मद तुगलक और फिरोज तुगलक के शासन-काल में इन कारखानों का उल्लेख मिलता है। अकबर के समय में सब कारखाने—"दिवाने-बुयतात" नामक सरकारी विभाग की अधीनता में थे। इन कारखानों के विषय में **जाफर** ने लिखा है—**"भारत में हजारों कारखाने थे, जिनमें लड़कों को बहुधा विशिष्ट कलाओं और दस्तकारियों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए किसी व्यवसाय के शिल्पकार का शिष्य बना दिया जाता था।"**

"There were thousand of *Karkhanas* or workshops, wherein boys were often apprenticed with the artisan to the trade for receiving instructions in particular arts and crafts."

—**S. M. Jaffer** : *Education in Muslim India*, pp. 12-13.

(iv) ललित कलाओं की शिक्षा (Education in Fine Arts)—लगभग सभी मुस्लिम शासक, सौन्दर्य के उपासक थे और अपने महलों एवं दरवाजों की शोभा में वृद्धि करने के लिए उत्कंठित रहते थे। फलस्वरूप, ललित कलाओं का अभूतपूर्व विकास हुआ। इन कलाओं में अग्रांकित को उच्चतम स्थान प्राप्त था—संगीत, चित्रकला और नृत्यकला। इन कलाओं का प्रशिक्षण—कारखानों में, वंशानुगत रूप में और व्यक्तिगत रूप में उस्तादों द्वारा दिया जाता था।

शिक्षा-संस्थाओं के प्रकार
(TYPES OF EDUCATIONAL INSTITUTIONS)

मुस्लिम काल में अनेक प्रकार की शिक्षा-संस्थाएँ थीं; यथा—

1. मकतब (Maktabs)—"मकतब" शब्द की उत्पत्ति अरबी के "कुतुब" (Kutub) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है—"उसने लिखा" (He wrote)। उर्दू भाषा में "कुतुब" शब्द—"किताब" का बहुवचन है। इस प्रकार, "मकतब" वह स्थान है, जहाँ बालकों को पढ़ना और लिखना सिखाया जाता है। मकतब, प्राथमिक शिक्षा के केन्द्र थे और साधारणतः किसी मसजिद से सम्बद्ध होते थे। कहीं-कहीं मौलवी लोग व्यक्तिगत रूप से अपने घरों पर या अन्य सुविधाजनक स्थानों पर मकतब चलाते थे। मकतबों में मुसलमान बालकों के साथ हिन्दू बालक भी शिक्षा प्राप्त कर सकते थे। परन्तु मकतबों की संख्या इतनी कम थी कि सब बालकों की प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता पूर्ण नहीं हो पाती थी।

डॉ० युसूफ हुसेन के अनुसार—"मकतब", एक शिक्षक वाली संस्थाएँ थीं। इनमें शिक्षण-कार्य प्रातःकाल से मध्यान्ह तक और फिर अपरान्ह में होता था। छात्रों से किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता था। शिक्षकों के भरण-पोषण की व्यवस्था, धनी व्यक्तियों द्वारा की जाती थी। राज्य को मकतबों में विशेष प्रयोजन नहीं था। जिन स्थानों में मदरसे नहीं थे, वहाँ के कुछ मकतबों में उच्च शिक्षा का भी प्रबन्ध था।

2. खानकाहें (Khanqahs)—"खानकाह", प्रारम्भिक शिक्षा के केन्द्र थे। इनमें केवल मुसलमान बालक ही शिक्षा प्राप्त कर सकते थे। इनका व्यय—दान में प्राप्त होने वाले धन से चलता था।

3. दरगाहें (Dargahas)—"खानकाहों" की भाँति "दरगाह" भी प्राथमिक शिक्षा के केन्द्र थे। इनकी स्थिति बहुत-कुछ खानकाहों के समान थी। इनमें भी केवल मुसलमान बालक ही शिक्षा प्राप्त कर सकते थे।

4. कुरान स्कूल (Koran Schools)—इन स्कूलों में केवल कुरान की शिक्षा दी जाती थी। इनका वर्णन करते हुए **डी ला फॉस** (De La Fosse) ने **"Quinqunnial Review of India, 1907-1912"** में लिखा है—"कुरान-स्कूल साधारणतः किसी मसजिद से संलग्न होते थे। इनमें छात्रों को पहले अरबी लिपि का ज्ञान कराया जाता था और फिर कुरान की आयतें कण्ठस्थ कराई जाती थीं। उनको लिखने की और गणित की शिक्षा नहीं दी जाती थी।"

5. फारसी के स्कूल (Persian Schools)—मुस्लिम शासन-काल में फारसी, राजभाषा थी। अतः राजपद प्राप्त करने के इच्छुक हिन्दुओं और मुसलमानों के लिए फारसी भाषा का

ज्ञान होना अनिवार्य था। इस माँग की पूर्ति करने के लिए फारसी के स्कूलों की स्थापना की गई थी। इसमें छात्रों को सादी और हाफिज के काव्यों एवं मुस्लिम संस्कृति की शिक्षा दी जाती थी। इन स्कूलों में शिक्षा का स्तर काफी ऊँचा था।

6. फारसी व कुरान के स्कूल (Persian Koran Schools)—जैसा कि नाम से विदित है, ये स्कूल—फारसी और कुरान स्कूलों के मिश्रित रूप थे। दूसरे शब्दों में, इन स्कूलों में फारसी और कुरान—दोनों की शिक्षा दी जाती थी।

7. अरबी के स्कूल (Arabic Schools)—इन स्कूलों का मुख्य उद्देश्य अरबी भाषा और साहित्य के विद्वानों का निर्माण करना था। अतः इनमें शिक्षा का स्तर अत्यन्त उच्च होना स्वाभाविक था।

8. मदरसे (Madarsahs)—"मदरसा" शब्द की उत्पत्ति, अरबी भाषा के "दरस" (Dars) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है—"भाषण" (A Lecture)। इस प्रकार, "मदरसा" वह स्थान है, जहाँ शिक्षण के लिए भाषण या व्याख्यान-विधि का प्रयोग किया जाता है। मदरसे, उच्च शिक्षा के केन्द्र थे और सामान्यतया किसी मसजिद से संलग्न होते थे। इनकी स्थापना—राज्य और धनी विद्याप्रेमियों द्वारा की जाती थी। इनमें विभिन्न शिक्षकों द्वारा विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा का माध्यम फारसी था।

मदरसे, सावास शिक्षा-केन्द्र थे, पर अपने परिवारों के साथ रहने वाले छात्र भी वहाँ जाकर शिक्षा प्राप्त कर सकते थे। इतिहासकार **इलियट** (Elliot) ने एक छात्र के विषय में लिखा है, जो दो मील दूर से प्रतिदिन दिल्ली के मदरसे में अध्ययन करने जाया करता था। मदरसों के साथ छात्रावास संलग्न थे, जिनमें छात्रों के दैनिक भोजन की सुन्दर व्यवस्था थी। प्रत्येक छात्र को आर्थिक सहायता के रूप में कुछ धन मिलता था। योग्य छात्रों को छात्रवृत्तियाँ दी जाती थीं। शिक्षकों के लिए मदरसों में निवास और भोजन का प्रबन्ध था। इस प्रकार, छात्र और शिक्षक निरन्तर घनिष्ठ सम्पर्क में रहते थे।